डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

कथासंधि

शिवमूर्ति का कहानी–पाठ
कहानी 'ख्वाजा ओ मेरे पीर' का पाठ किया

नई दिल्ली। 19 जून 2018। साहित्य अकादेमी के प्रतिष्ठित कथासंधि कार्यक्रम के अंतर्गत आज प्रख्यात हिंदी कथाकार शिवमूर्ति का कहानी–पाठ आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपनी लंबी कहानी 'ख्वाजा ओ मेरे पीर' का पाठ किया। कहानी मामा–मामी के परिवार के इर्द–गिर्द बुनी गई है जो उत्तर प्रदेश के पूरे गाँव के परिदृश्य को निरूपित करते हुए स्थानीय समस्याओं के साथ–साथ सामाजिक असंगतियों को भी प्रस्तुत करती है। ज्ञात हो कि कथा–लेखन के क्षेत्र में प्रारंभ से ही प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने वाले शिवमूर्ति की कहानियों में निहित नाट्य सम्भावनाओं ने दृश्य–माध्यमों को भी प्रभावित किया है। *कसाईबाड़ा, तिरियाचरित्तर, भरतनाट्यम* तथा *सिरी उपमाजोग* पर फिल्में बनीं। *तिरियाचरित्तर* तथा *कसाईबाड़ा* के हजारों मंचन हुए। अनेक देशी–विदेशी भाषाओं में कई कहानियों के अनुवाद भी हो चुके हैं। उनके प्रकाशित कहानी–संग्रह हैं – *केसर कस्तूरी व कुच्ची का कानून*। उपन्यास : *त्रिशुल, तर्पण, आखिरी छलांग*। नाटक : *कसाईबाड़ा*। – *तिरियाचरित्तर* कहानी 'हंस' पत्रिका द्वारा सर्वश्रेष्ठ कहानी के रूप में पुरस्कृत हुई थी। शिवमूर्ति जी को मिले अन्य प्रमुख सम्मान हैं – आनंदसागर स्मृति कथाक्रम सम्मान, लमही सम्मान, सृजन सम्मान एवं अवध भारती सम्मान।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुस्तक भेंट कर शिवमूर्ति जी का स्वागत किया। कथा–पाठ के अंत में उपस्थित श्रोताओं ने उनसे कई प्रश्न भी पूछे। चितरंजन मिश्र, गंगाप्रसाद विमल एवं अनामिका ने पठित कहानी पर टिप्पणी करते हुए इसे संवेदनाओं से ओतप्रोत आख्यान कहा। आत्मकथा लिखने संबंधी एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मैं अपनी रचनाओं में टुकड़ों–टुकड़ों में ही अपनी आत्मकथा लिख रहा हूँ। कार्यक्रम में हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र, गंगा प्रसाद विमल, राजकुमार गौतम, अनामिका, विवेकानंद, संजीव कौशल एवं नीरज आदि कई महत्त्वपूर्ण साहित्यकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

डॉ. के. श्रीनिवासराव